**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.hindijournal.com**
**Volume 2; Issue 1; January 2016; Page No. 65-68**

# समकालीन लंबी कहानी में स्त्री–विमर्श के विविध आयाम

**डॉ. नन्दकिशोर मौर्य**
प्राध्यापक, विभाग हिन्दी, गौरीदेवी राजकीय महिला महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

**सारांश**
समकालीन कहानी अपने विकास के ऐसे अनेक उतार–चढ़ाव देखकर आई है। उसने हमेशा समय की आंच पर खुद को परखा भी है। अनेक दबावों तनावों और संघर्षों का सामना करते हुए उसने अपने विकास का यह पड़ाव पूरा कर लिया है। संघर्ष दबाव और तनाव आज भी कम नहीं हैं। जो कहानीकार इस दुर्द्धर्ष संघर्ष को झेल गए, उनकी कहानियां सामाजिक विकास की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण अंग बन गई और जिसने संघर्ष के समक्ष घुटने टेक परिस्थितियों से समझौता कर लिया उनकी कहानियां कमजोर, नकली और रहस्यमयी हो गई।" इनकी पकड़ समकालीन यथार्थ पर ढीली पड़ गई। कला की बदसूरती अश्लीलता को जन्म देती है। कला में वीभत्स, असुन्दर और कुरूप का चित्रण सार्थक हो सकता है पर कला को ही वीभत्स, असुन्दर, कुरूप और अश्लील बना दिया जाए तो उचित नहीं है। नारीवादी कहानी लेखक और लेखिकाओं ने जहां हिन्दी कहानी को समृद्ध किया है वहीं स्त्री जीवन की त्रासदियों को लेकर जो क्षोभ और घृणा उनके भीतर पनपी है उसने यौन विच्युतियों को जन्म दिया है। कई बार ऐसा लगता है कि केवल यौन–सम्बन्धों की उन्मुक्तता और स्वच्छन्दता ही स्त्री की वास्तविक मुक्ति है। राजेन्द्र यादव, दूधनाथ सिंह, आबिद सुरति, मणिका मोहिनी, लवलीन, अखिलेश, महेन्द्र भल्ला, जयाजादवानी, मृदुला गर्ग जैसे अनेक कहानीकारों की कहानियों में यह संकेत मिलता है।

**मूल शब्दः** हंस, पत्रिका, नारी, स्त्री, रचना, कहानी, साहित्य, समकालीनकहानी, संस्कृति, सजगता, धर्म सृजन, दृष्टिकोण, विमर्श

## प्रस्तावना

समकालीन कहानी अपने विकास के ऐसे अनेक उतार–चढ़ाव देखकर आई है। उसने हमेशा समय की आंच पर खुद को परखा भी है। अनेक दबावों तनावों और संघर्षों का सामना करते हुए उसने अपने विकास का यह पड़ाव पूरा कर लिया है। संघर्ष दबाव और तनाव आज भी कम नहीं हैं। "यह समय बड़ा क्रूर और जटिल है, पत्थर की तरह सख्त और खुरदुरा। यह एक ऐसा बुलडोजर है जिसने समाज के भीतर की नैतिकता, ईमानदारी, कोमलता और सहिष्णुता को तोड़–फोड़ कर रख दिया है और समाज की हलचलों से खुद निर्देशित भी होता है। समय की इस मार का उस पर भी बहुत असर पड़ा है। जो कहानीकार इस दुर्द्धर्ष संघर्ष को झेल गए, उनकी कहानियां सामाजिक विकास की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण अंग बन गई और जिसने संघर्ष के समक्ष घुटने टेक परिस्थितियों से समझौता कर लिया उनकी कहानियां कमजोर, नकली और रहस्यमयी हो गई।" इनकी पकड़ समकालीन यथार्थ पर ढीली पड़ गई।

बावजूद इसके ऐसे कई कहानीकार हैं जिन्होंने समय की रफ्तार और समकालीन यथार्थ को अपनी लंबी कहानियों में ढाल लिया है। स्वयं प्रकाश, संजीव, उदय प्रकाश, शिवमूर्ति, क्षेमेन्द्र चौपड़ा, हरिचरण प्रकाश, अरुण प्रकाश, ममता कालिया, असगर वजाहत, विष्णु नागर, रविन्द्र वर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्य बाला, जया जादवानी जैसे अनेक कथाकार कहानी विधा को पूरी शिद्दत से साध रहे हैं। 'यक्षगान' अखिलेश की ऐसी लंबी कहानी है जो आज की गंदी और संस्कार हीन उन्मुक्त यौन उन्माद और संपूर्ण मनुष्य के पतित आचरण को दिखाती है। स्त्री जीवन राजनीति, की अनगिनत पीड़ाओं को व्यक्त करती इस कहानी में एक युवती 'सरोज' के साथ हुये अमानवीय अत्याचार और उत्पीड़न की हृदय को झकझोर देने वाली अभिव्यक्ति है जो वर्तमान समाज और व्यवस्था के कमीनेपन को उजागर करती है। प्रेम संबंधों में पड़कर छैल बिहारी के साथ सुनहरे जीवन के सपने देखने वाली यह सरोज एक दिन घर छोड़कर छैल बिहारी के साथ भाग जाती है। यहीं से उसके जीवन की त्रासदियों का आरंभ हो जाता है। जिस छैल बिहारी को वह अपना सर्वस्व सौंप देती है वहीं छैल बिहारी उसका सौदा कर देता है और अपने मित्रों को सौंप देता है। अपने पर हुए बलात्कार की फरियाद लेकर जब वह पुलिस स्टेशन जाती है तो वहां भी उसका देह शोषण होता है। अध्यक्ष गोरखनाथ, छैल बिहारी, परम् और भेला कोई उसे नहीं छोड़ता। छैल बिहारी उसे कहता है– "तू अनायास ताव खा रही है" छैल बिहारी ने उसे शांत करने का एक प्रयत्न और किया, "कुंती ने नहीं सूर्य से संभोग कराया था। अहिल्या को नहीं इंद्र ने भोगा था। फिर सबसे बड़ी बात, तुम्हारा तो पति तुमको ऐसा करने की आज्ञा दे रहा है।"

वस्तुतः कहानी में स्त्री को भोग्या मानने की नियति पर प्रहार किया गया है। पति द्वारा ही वेश्यावृत्ति के लिए प्रताड़ित की गई स्त्री की करुण कथा है। कहानी में 'हर डाल पर उल्लू बैठा है' वाली कहावत चरितार्थ होती है। प्रत्येक स्तर पर ढ़ोंगी, पाखंडी, भ्रष्ट लोगों का 'वर्चस्व है। आज 'सरोज' जैसी कितनी ही लड़कियां भगाई जाती हैं अपना स्वार्थ पूरा करके उन्हें वेश्यालायों की अंधी दुनिया में फेंक दिया जाता है।

'अन्दर आना मना है' एक प्रतिभाशाली लड़की श्यामला लाल की कहानी है। श्यामला एक मेहनती होशियार तथा प्रतिभा सम्पन्न लड़की है जो एक मैस के हैड कुक की बेटी है। श्यामला स्त्री होने के कारण अपने आस–पास के लोगों के ताने सुन–सुन कर व्यथित रहती है। लेकिन वह जिन्दगी के संघर्ष से हार नहीं मानती। एक लक्ष्य को सामने रखकर वह निरन्तर संघर्ष करती है। कॉलेज में जाने पर सहपाठियों द्वारा की गई टिप्पणी पर तथा घर पर पिता व चावला साहब जैसे लोगों से टिप्पणियां सुनकर उसका हृदय बिंध सा जाता है। उसका पिता हर दम उस पर फुफकारता रहता है– "बटेर की तरह टकर–टकर क्या ताक रही है? मेरे सिर पर सींग निकल आए हैं? इतना बड़ा नुकसान करने के बाद बेशरमी के साथ तन कर खड़ी होकर मुझे अपने दीदे दिखा रही है। गरदन झुका नहीं तो तेरी पढ़ाई का सारा गुमान चप्पलों से झाड़ दूंगा।" अपनी बेटी की आंखों में क्रोध और घृणा के दहकते अंगारों की आंच दामोदर सह नहीं पा रहा था। उन अंगारों को दबाने या बुझाने का काम उसके हाथ नहीं कर सकते थे। उनसे बचने के लिए झुकवाना अनिवार्य था।"

वस्तुतः यह कहानी दोहरे स्तर पर शोषित स्त्री श्यामला की मनोदशा का मनोवैज्ञानिक और मार्मिक चित्रण करती है।

"मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में ग्राम जीवन और उसकी समस्याएं हैं। अपनी सीधी सट्ट शैली में मार्मिक कचोट उत्पन्न करने वाली मैत्रेयी पुष्पा की कहानियां अपने नये सौन्दर्यबोध के कारण आत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गई हैं 'गोमा हंसती है' और 'रास' जैसी कहानियों में उनका यह नवीन बोध अनेक सम्भावनाएं उत्पन्न करता है।"[4] 'गोमा हंसती है' नामक लंबी कहानी में मैत्रेयी पुष्पा नारी की परिवर्तित होती भूमिका को अभिव्यक्ति देती है। यहां विशेष बात यह है कि यह नारी शहरी न होकर ग्रामीण है।

'दो औरतें' नामक लंबी कहानी में कृष्ण बिहारी ने वेश्यावृत्ति की समस्या पर एक संवेदनशील और नया नजरिया प्रस्तुत किया है। यहां वेश्या–जीवन की विवशताओं और हताशाओं का मानवीय दृष्टिकोण से गंभीर विवेचन हुआ है। स्त्री जीवन की समस्याओं पर भी नयी दृष्टि पड़ी है। एक औरत (वेश्या) का यह कथन उसके जीवन की सारी विवशता और मानवीयता को साकार कर देता है– "मसलन कोई मुझसे जबरदस्ती कुछ करवाए तो वह मुझे अच्छा आदमी नहीं लगता और मैं उसका कहा करती भी नहीं। चाहे फिर जो हो..... और होगा भी क्या ज्यादा से ज्यादा ग्राहक निकल जाएगा....."

"तुम्हारा तो नुकसान होगा न...."

"फायदे और नुकसान के बारे में बनिए सोचते हैं... मैं पेशा जरूर करती हूँ पर बनिया नहीं हूं..."[5] आर्थिक मजबूरी वेश्यावृत्ति का बड़ा कारण है। एक स्त्री के स्त्री होने के स्वाभिमान को और उसकी यौन–मर्यादा को नये ढंग से रेखांकित किया गया है।

'स्वीकारोक्ति' कविता पाण्डेय द्वारा लिखित लंबी कहानी है। इसमें एक स्वच्छन्द विचारों और नारी मुक्ति की आकांक्षी विद्रोही युवती प्रियवंदा की घुटन परिलक्षित होती है। मूलतः यह अंतरधर्म विवाह के बाद उत्पन्न धार्मिक संकीर्णताओं और टकराहटों की कहानी है। धर्म किस तरह स्त्री की अस्मिता से खेलता है, धार्मिक मान्यताएं किस तरह से उसके जीवन को तहस– बहस करती है, इस लंबी कहानी में प्रकट होता है। विद्रोह करके ईसाई युवक से प्रेम विवाह करना और बदले में अपने पति का भी समर्थ नहीं पाना उसे तोड़ देता है और वह अधिक विद्रोही हो जाती है। वह कभी–कभी आत्मग्लानि भी महसूस करती है। लगभग पागलपन की हद तक पहुंची प्रियवंदा का स्वर बहुत कटु हो उठता है और व्यवहार आक्रामक ! वह चीख उठती– "धर्म के प्रति तुम्हारी यह आस्था तब कहां थी जब तुमने रक्त–मांस–मजा के लोथड़े को मां के गर्भ से पृथक करवाने के लिए दबाव डाला था ? उस शिशु को जीने का अधिकार क्या इस लिए नहीं था कि उसकी मां हिन्दू थी और उसके जीवन पर धर्म की स्वीकृति की मुहर नहीं लगी थी।"[6]

दो कट्टर धार्मिक विचारधाराओं वाले परिवारों के बीच पिसती एक स्त्री प्रियवंदा की कहानी है जो अंततः विद्रोही बनकर स्त्री चेतना के लिए काम करती है। धर्म भी वास्तव में पुरुष या पितृसत्ता का ही आविष्कार है जो स्त्री के प्रति एक ही नजरिया रखता है।

'कतरनी की मेहन्दी' लंबी कहानी एक घुमक्कड़ और बातूनी मुस्लिम बुढिया कतरनी की गाथा है जो अपने व्यवहार की सौम्यता और सहिष्णुता की वजह से हिन्दुओं के बीच रहती है। जबकि कुछ लोग उस पर यह दबाव डालते हैं कि वह हिन्दुओं के बीच ना रहकर अपने बेटे–बहू के पास रहे। 'लच्छी बाबा' कट्टर ब्राह्मणवादी सोच के पण्डित–पुजारी हैं जो कतरनी को गांव से बाहर निकालना चाहते हैं पर 'सुमरिन वर्मा' जैसे पात्र भी हैं जो कतरनी का पक्ष लेकर मानवीयता के जिन्दा होने के सबूत भी देते हैं।

कतरनी सभी औरतों को मेहन्दी लगाकर उनके सुहाग व पुत्रों की रक्षा की दुआ देती है। जब लच्छी बाबा उसे घर से बेदखल करना चाहते हैं तो सभी हिन्दू स्त्रियां उसका विरोध करते हुए कहती हैं– "लच्छी बाबा पुरुष जिद का प्रतीक है। जो नारी की बर्बादी और आँसुओं के पक्ष में ही जा सकती है लेकिन हम कतरनी को अकेला नहीं होने देंगे।"[7]

स्त्री– अस्मिता का नया आयाम स्त्री तो स्त्री ही होती है, वह हिन्दू या मुसलमान नहीं होती। सभी स्त्रियों की पीड़ा एक–सी होती है। पुरुषों और धर्म–ग्रन्थों से प्रताड़ित मुस्लिम बुढ़िया कतरनी के समर्थन में हिन्दू–स्त्रियों का आना इसका प्रमाण है। 'लच्छी बाबा' जैसे ब्राह्मण सांप्रदायिकता के पक्षधर है तो 'सुमिरन वर्मा' जैसे दलित पात्र सांप्रदायिकता के विरोधी।

यह कहानी एक यथार्थवादी दर्शन का निर्माण करती है कि 'पुरुष जिद जारी की बर्बादी और आँसुओं के पक्ष में ही जा सकती है।' साथ ही कहानी एक साथ स्त्री, सांप्रदायिक और दलित तीन विमर्शो को सामने लाती है।

शैवाल की 'नाचीज उसी शहर की गली है जहां फुक्कनबाबू की प्रेमिका रहती है' नामक लंबी कहानी आम जीवन की सच्चाईयों का सजीव चित्रण करती है। फुक्कन बाबू व उनकी पत्नी वेगम साहिबा एक साथ रहते हैं, जो जीवन के संघर्ष में पिस रहे हैं। वस्तुतः कहानी सीमित संसाधनों में चलते–दौड़ते जीवन की गाथा है। संघर्ष और अभाव भरे जीवन से त्रस्त एक सम्पन्न परिवार की स्त्री का आम जीवन जीने वाले पति के साथ कठिनाईयों भरे जीवन की गाथा साथ ही स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा भी नारी होने की नियति से अभिशप्त बेगम साहिबा।

'अथातो जश्न– जिज्ञासा' संतोष दीक्षित की लंबी कहानी है जो मुख्य रूप से एक संस्कृत शिक्षक हरिहर नाथ जी के इर्द–गिर्द उनकी मनोवेदना और अन्तर्द्वन्द्व के साथ चलती है। हरिहर नाथ जी न तो बदलते समाज के साथ अपने को बदल पाये और ना ही अपने महत्वाकांक्षी पत्नी को संतुष्ट कर पाये।

दूसरी तरफ मनोरमा पैसे और विलास के लिए मुंशी जी से सम्पर्क बढ़ाने लगी। एक दिन हरिहर ने मुंशी जी को अपनी अनुपस्थिति में घर में देखा तो उन्होंने घर छोड़ दिया लेकिन फिर वापस आना पड़ा। इसी घुटन के साथ जी रहे हरिहर एक दिन चल बसे। वस्तुतः इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने एक संस्कृत शिक्षक की मानसिक वेदना, समायोजन के प्रयास, परिवार को संभालने की चेष्टा का सुन्दर वर्णन किया है। अधिक महत्वकांक्षा किस प्रकार से परिवार का विनाश करती है। इसका चित्रण भी किया गया है। भौतिकवादी समाज में पति–पत्नी सम्बंधो को भी समझाने का प्रयास किया गया है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि हरिहर दास जी अपनी पत्नी की महत्वकांक्षा के बोझ को नहीं सह पाये और अपनी पराजय की पीड़ा में ही तिक्त होकर मर गये।

'हंस' में प्रकाशित कहानी (विशेषकर लंबी कहानी) का इन्द्रिय बोध दो जीवन पद्धतियों से होकर हमारे सामने आ रहा है। एक महानगरीय इन्द्रिय बोध से जुड़े जीवन की कहानी है जिसमें व्यक्ति की सामाजिकता और सामूहिकता का स्वरूप विखण्डित और विरूपित होकर सामने आया है। वैश्वीकरण और विश्वग्राम की कामना में मनुष्य खुद एक उत्पाद' बन कर रह गया है। संतोष दीक्षित की लंबी कहानी 'अथातो जश्न जिज्ञासा' और रमेश उपाध्याय की लंबी कहानी 'डाक्युड्रामा' इसका प्रमाण हैं।

उत्तर आधुनिक होने की होड़ में नारी देह और यौन सम्बन्धों के खुले चित्रण को नये यथार्थ, नये इन्द्रिय बोध और नये सौन्दर्यबोध के नाम पर परोसा जा रहा है। क्या कई बार ऐसा नहीं लगता कि उत्तर आधुनिकतावाद के दर्शन का बराबर विरोध करने के बाद भी हमारे अवचेतन में कहीं न कहीं वह अपनी जड़ें जमाये बैठा है और जब–तब मौका देखकर, हमारे जीवन मूल्यों को नष्ट–भ्रष्ट करने पर उतारू हो जाता है! और क्या हम यह नहीं देख रहे हैं कि केवल निर्लज्जता, नंगापन और यौन अनाचार ही इस दर्शन की सबसे बड़ी उपलब्धि है?

क्या यही होगा भविष्य की कहानियों का स्वरूप? हिन्दी की अनेक कहानियों को देखकर तो यही लगता है कि इन

कहानीकारों की कथावस्तु 'यूज एण्ड थ्रो' वाली तर्ज पर ही रची गई है जो किसी न किसी रूप में विकृत सौन्दर्य को उचित ठहरा रही है, बाजारवाद और उत्तर–आधुनिकतावादियों का एक समूह तो ऐसी कहानियां लिख ही रहा है, अपने आपको जनवादी और जनचेतना के प्रबल पक्षधर कहने वाले कहानीकारों की कहानियों में भी ऐसी प्रवृत्तियां खूब फली फूली हैं। यूं तो इस चित्रण की परम्परा चोरी छिपे साहित्य में बहुत पहले से चली आ रही है लेकिन आज ऐसे चित्रण को अनिवार्य आवश्यकता और युगधर्म बताने की लम्बी–चौड़ी वकालत सम्पादकीय टिप्पणियों में चल रही है। अब तो ये कहानियां न केवल छपने की गारन्टी हैं वरन् कहानीकार की प्रसिद्धि का 'टोटका' भी हैं।

यह काम पिछले 5–7 सालों से 'हंस' में भी हो रहा है। कई महत्त्वपूर्ण स्त्री कथाकारों ने भी इसका विरोध किया है। स्वयं 'राजेन्द्र यादव पर केंद्रित' 'पाखी' के विशेषांक में मैत्रेयी पुष्पा, सुधा अरोड़ा, रमणिका गुप्ता, अनामिका आदि लेखिकाओं ने इस और संकेत किया है। सुधा अरोड़ा ने कहा है– "बढ़–चढ़कर लिखे गए यौन–अंतरंगताओं के वृतान्तों को सर्वाधिक श्रेष्ठ और सफल लेखन का दर्जा दिया जा रहा है और धीरे–धीरे यह भ्रम पैदा किया जा रहा है कि 'व्यभिचार' का निर्बाध प्रवाह, सामाजिक संरचना के परंपरागत पितृसत्तात्मक ढांचे में बारूद का काम करेगा। साहित्य के ऐसे स्वघोषित नारीवादी रचनाकार स्वयं को नारी मुक्ति का झण्डाबरदार मानने लगे हैं। हिन्दी के कुछ काम–कुण्ठित स्त्री चिंतक 'विचार की मुद्रा' बनाकर सेक्स मुक्ति में ही स्त्री–मुक्ति का महामंत्र खोजने लगे हैं।"[8]

उदयप्रकाश संजीव की तरह ही बड़े परिश्रमी कहानीकार हैं। उनमें परिस्थितियों की टकराहट से हल पैदा करवाने की अकूत संभावनाएं हैं पर वे कहानियों में ऐन वक्त पर कोई न कोई ऐसा मोड़ ले आते हैं जहां कहानीपन तिरोहित हो जाता है। 'छतरियां' कहानी भी ठीक ठाक चलती है पर एकाएक उदयप्रकाश की सौन्दर्य–भेदी दृष्टि उस लड़की के सद्यस्नात वक्षों को रहस्मयी छतरियों के रूप में साकार कर कहानी की 'काया पलट' कर देती है।[9] ऐसे सभी प्रसंग उदय की कहानियों को अत्यन्त कमजोर बना देते हैं। उनकी अनेक सफल कहानियों में भी शिल्प सधा हुआ नहीं है। उदयप्रकाश के पात्र भी प्रायः असहज और असंप्रेषणीय हैं। दरअसल उदयप्रकाश के यहां भाषा, शिल्प और कथ्य में जबदरस्त बिखराव है जो कभी–कभी प्रभावित कर लेता है पर अधिकांशतः खिजाता रहता है। उदयप्रकाश के चरित्र भी प्रायः ईमानदार नहीं होते। कब पाठक को धोखा दे जाएं, कहा नहीं जा सकता! उनका कथा तत्त्व जो चमत्कारिक होने की वजह से बड़ी तत्परता से पहले–पहल तो आकर्षित करता है पर शनैः शनैः वह वितृष्णा उत्पन्न करता जाता है, वहां जिज्ञासा तो होती है पर वह भी एक प्रकार से चौंकाने वाली होती है। कुल मिलाकर वे एक ऐसी ऐन्द्रिकता जगाते हैं जिसका सीधा सरोकार यौन और नारी देह से है। ऐसी कहानियों को लेकर अनेक बोल्ड कथा लेखिकाओं ने भी स्त्री–देह को लेकर प्रश्न उठाए हैं।

लवलीन बोल्ड कथाकार हैं, साहसी, आक्रामक और नारीवादी भी! वह चर्चित और विवादास्पद भी रही हैं। बहुत पहले उनकी दो औरतें' कहानी आयी थी। फिर 'चक्रवात'। दोनों ही कहानियों ने हिन्दी जगत में तहलका मचा दिया था। पाठकों की 'चेतना' को कहानियों ने बुरी तरह झकझोर दिया था। लेकिन सचाई यह है कि बहुत बड़े पाठक और आलोचक वर्ग ने उनके लिए अच्छी टिप्पणी नहीं की। भले ही राजेन्द्र यादव और लवलीन के लिए ये लोग दकियानूसी, पुरातन पंथी और नासमझ रहे हों पर इन्होंने इन कहानियों को कहानीपन के लिए बहुत खतरा माना था । लवलीन ने उक्त दोनों कहानियों में पाठक को 'कामरस' की ऐसी घुट्टी पिलानी चाही है जिसके कथारस में पाठक थोड़ी देर तो ऊभ–चूभ होता रहता है पर चेतना लौटने पर वह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि यह कौनसी कहानी है ? 'चक्रवात' की नायिका है कीर्ति। उसके मन में बड़ी जिज्ञासा और कौतूहल है कि पति के अलावा दूसरे मर्द से संभोग करना किस प्रकार का अनुभव होगा? वह संभोग जैसी नितान्त निजी अनुभूति को दूसरे के साथ बांटने को उतावली है। इस काम के लिए वह अपने एक विवाहित मित्र को चुनती है। श्रेष्ठ साहित्य कलात्मक मूल्य और सामाजिक सरोकार, दोनों का निर्वाह करने वाला होता है। इसलिए यथार्थ या कला या बोल्डनेस के नाम पर सब कुछ साहित्य का कथ्य नहीं हो सकता। कला के साथ उसका कुरूप और बदसूरत होना भी जुड़ा होता है।

कला की बदसूरती अश्लीलता को जन्म देती है। कला में वीभत्स, असुन्दर और कुरूप का चित्रण सार्थक हो सकता है पर कला को ही वीभत्स, असुन्दर, कुरूप और अश्लील बना दिया जाए तो उचित नहीं है। लवलीन ने इस पक्ष को जानबूझ कर अनदेखा किया है। बात चाहे यौन वर्जनाओं की हो, यौन शुचिता के प्रश्न की हो या पुरुष से प्रतिशोध लेने की, यथार्थ और इन्द्रिय बोध की सघनता के नाम पर ऐसे वर्णन उचित नहीं हैं। कथाकार कवयित्री अनामिका ने अपने महत्त्वपूर्ण आलेख 'हम 'पुरबिया' औरतें और 'हमारा' स्त्री विमर्श' में स्पष्ट किया है कि– स्त्री–आन्दोलन प्रतिशोध–पीड़ित नहीं है। स्त्री–आन्दोलन की समर्थक मानवियां हैं, मादा ड्रेकुलाएं नहीं!" [0]

लवलीन की एक और लंबी कहानी 'सुरंग पार की रोशनी' में भी ऐसा ही वर्णन हुआ है। नायिका बलात्कार होने की घातक अभिव्यक्ति को भूलकर उसके काल्पनिक आनन्द में इतने गहरे तक आगे निकल जाती है कि उसे लगता है सचमुच उसके साथ बलात्कार हो रहा है और उसे आनन्द आ रहा है। वे लिखती हैं– ".... मैं ऊंघ में बलात्कार की कल्पनाएं कर रही थी। तो यह सब कल्पना थी? जो मेरे अवचेतन की सीक्रेट डिजायर के रूप में नींद में उलझकर बाहर आ गया था।" ताज्जुब है लवलीन! बलात्कार के बाद की घातक यन्त्रणा के कारण आज समाज और साहित्य में बड़े–बड़े आन्दोलन हो रहे हैं, आत्म हत्याएं हो रही हैं, आप उसी बलात्कार में आनन्द मना रही हैं। सुनसान रात में जीप में एक अकेली नारी को बलात्कार का खौफ लगभग मौत के करीब ले जाता है पर आप ने अपनी 'सीक्रेट डिजायर' की घोषणा कर के पाठक से वह सारी सहानुभूति खो दी जो आपके लिए हो सकती थी।

हिन्दी 'साहित्य के यौनाचार्य राजेन्द्र यादव ने भी ऐसी कहानियां लिखी हैं। "मुझे याद आती है उनकी बहुत पहले लिखी कहानी 'प्रतीक्षा' जिसमें 'नन्दा व गीता के समलैंगिक सम्बन्धों को उन्होंने बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति दी है। यह अटपटा विषय होने के बाद भी कहानी प्रभावशाली लगती है। पर 'हासिल' कहानी में राजेन्द्र यादव ने वह सब कुछ हासिल कर ही लिया जिसे पीछे की कहानियों में वे छोड़ आये थे। ङ इस कहानी में 'हंस' में ही बहुत कुछ कह दिया गया है।

नारीवादी कहानी लेखक और लेखिकाओं ने जहां हिन्दी कहानी को समृद्ध किया है वहीं स्त्री जीवन की त्रासदियों को लेकर जो क्षोभ और घृणा उनके भीतर पनपी है उसने यौन विच्युतियों को जन्म दिया है। कई बार ऐसा लगता है कि केवल यौन–सम्बन्धों की उन्मुक्तता और स्वच्छन्दता ही स्त्री की वास्तविक मुक्ति है। राजेन्द्र यादव, दूधनाथ सिंह, आबिद सुरति, मणिका मोहिनी, लवलीन, अखिलेश, महेन्द्र भल्ला, जयाजादवानी, मृदुला गर्ग जैसे अनेक कहानीकारों की कहानियों में यह संकेत मिलता है।

## संदर्भ सूचि


1. डॉ. नन्दकिशोर नीलमः सौन्दर्यशास्त्र के बदलते प्रतिमान और समकालीन कहानी, दस्तक– अंक 12; सं. राघव आलोक, पृष्ठ 100.
2. अखिलेशः कहानी यक्षगान, हंस नव, 2009; पृष्ठ 71.

3. प्रभा दीक्षितः कहानी– अन्दर आना मना है, हंस– जनवरी 1994, पृष्ठ 58,
4. डॉ. नन्दकिशोर नीलमः सौन्दर्यशास्त्र के बदलते प्रतिमान और समकालीन कहानी, दस्तक– अंक 12; सं. राघव आलोक; पृष्ठ– 107.
5. कृष्ण बिहारीः कहानी– दो औरतें, हंस– अक्टू 1995; पृष्ठ– 62.
6. कविता पाण्डेयः कहानी स्वीकारोक्ति, हंस– मार्च 1993 पृष्ठ– 60.
7. सुबोध कुमार झाः कहानी कतरनी की मेहन्दी, हंस–मई 1995; पृष्ठ 72.
8. पत्रिका–पाखीः विशेषांक 'राजेन्द्र यादव पर केंद्रित' सं. प्रेम भारद्वाज, अंकः सित. 2011, पृष्ठ 144.
9. उदय प्रकाशः कहानी छतरियां, हंस– अगस्त 1996; पृष्ठ 66.
10. हंसः विशेषांक 'अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्यः खण्ड–1' फरवरी– 2000; पृष्ठ 43.
11. लवलीनः कहानी– सुरंग पार की रोशनी, हंस– अक्टू. 1998, पृष्ठ– 65.
12. पत्रिका–पाखीः विशेषांक 'राजेन्द्र यादव पर केंद्रित' सं. प्रेम भारद्वाज, अंकः सित. 2011; पृष्ठ–123.
13. डॉ. नन्दकिशोर नीलमः सौन्दर्यशास्त्र के बदलते प्रतिमान और समकालीन कहानी, दस्तक– अंक 12; सं. राघव आलोक; पृष्ठ– 103.